Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

Original Article

व्यावसायिक संरचना का विकासखण्डवार स्थानिक विश्लेषणः जनपद प्रयागराज के विशेष संदर्भ में

धर्मेन्द्र कुमार यादव[1], डॉ.मनोज कुमार शुक्ला[2]
[1]शोध छात्र,भूगोल विभाग, मड़ियाहूँ पी.जी. कालेज, मड़ियाहूँ, जौनपुर
[2]शोध निदेशक, सहायक आचार्य,भूगोल विभाग, मड़ियाहूँ पी.जी. कालेज, मड़ियाहूँ, जौनपुर
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल, विश्वविद्यालय जौनपुर
Email: dharmendrkyadav92@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180113
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 1(A)
Pp. 61-68
January - 2026

Submitted: 16 Dec. 2025
Revised: 26 Dec. 2025
Accepted: 11 Jan. 2026
Published: 31 Jan. 2026

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य जनपद प्रयागराज में वर्ष 2023 के दौरान विकासखण्डवार जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का विश्लेषण करना है। अध्ययन में कुल मुख्य कर्मकरों का कुल जनसंख्या से प्रतिशत, कृषि में संलग्न कर्मकरों का कुल मुख्य कर्मकरों से प्रतिशत तथा पारिवारिक उद्योगों में लगे कर्मकरों का अनुपात विश्लेषित किया गया है। आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि जनपद की अर्थव्यवस्था आज भी मुख्यतप्रतिशत कृषि–प्रधान है, जहाँ औसतन लगभग 59 प्रतिशत मुख्य कर्मकर कृषि में संलग्न हैं, जबकि पारिवारिक उद्योगों का योगदान अपेक्षाकृत सीमित (लगभग 8.46 प्रतिशत) है। विकासखण्डवार विश्लेषण से कार्य संरचना में स्पष्ट स्थानिक विषमता परिलक्षित होती है। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि संतुलित क्षेत्रीय विकास हेतु कृषि के साथ–साथ गैर–कृषि एवं पारिवारिक उद्योगों को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द–*मुख्य कर्मकर, कृषि कर्मकर, पारिवारिक उद्योग, कार्य संरचना, स्थानिक विषमता, जनपद प्रयागराज, क्षेत्रीय विकास*

प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को समझने में उसकी कार्यशील जनसंख्या की संरचना का विशेष महत्त्व होता है। व्यावसायिक संरचना न केवल आजीविका के साधनों को दर्शाती है, बल्कि क्षेत्रीय विकास, संसाधनों के उपयोग तथा जीवन स्तर को भी प्रभावित करती है। जनपद प्रयागराज उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख जनपद है, जहाँ ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात अधिक है और कृषि आजीविका का मुख्य आधार बनी हुई है। इसके बावजूद विभिन्न विकासखण्डों में कार्य संरचना एक समान नहीं है। कहीं कृषि की प्रधानता है तो कहीं पारिवारिक उद्योग एवं गैर–कृषि गतिविधियाँ उभर रही हैं। इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन जनपद प्रयागराज में विकासखण्डवार मुख्य कर्मकरों, कृषि कर्मकरों तथा पारिवारिक उद्योगों में संलग्न कर्मकरों के स्थानिक वितरण का विश्लेषण करता है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र जनपद प्रयागराज उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग में स्थित है, जिसकी पूर्व–पश्चिम चौड़ाई 96 किमी तथा उत्तर–दक्षिण लम्बाई 110 किमी है। इस जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5482 वर्ग किमी है, जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 2.25 प्रतिशत है। क्षेत्र का अक्षांशीय विस्तार 24°48′ से 25°47′ उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 81°30′ से 82°22′ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। जनपद की सीमाएँ उत्तर में प्रतापगढ़, उत्तर–पूर्व में जौनपुर, पूर्व में संत रविदास (भदोही), दक्षिण–पूर्व में मिर्जापुर, पश्चिम में कौशाम्बी, दक्षिण–पश्चिम में चित्रकूट तथा दक्षिण में मध्य प्रदेश के रीवा जनपद से लगी हैं। प्रशासनिक प्रबंधन हेतु अध्ययन क्षेत्र को 8 तहसीलो– सोरांव, फूलपुर, बारा, करछना, इलाहाबाद, हंडिया, मेजा एवं कोरांव में विभाजित किया गया है। विकास कार्यों के संचालन एवं योजना क्रियान्वयन के लिए इसे 20 विकासखण्डों में बांटा गया हैं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
धर्मेंद्र कुमार यादव, शोध छात्र, भूगोल विभाग, मड़ियाहू पी.जी. कालेज, मड़ियाहू, जौनपुर

How to cite this article:
यादव, . धर्मेंद्र . कुमार ., & शुक्ला, . मनोज . कुमार . (2026). व्यावसायिक संरचना का विकासखण्डवार स्थानिक विश्लेषणः जनपद प्रयागराज के विशेष संदर्भ में. Journal of Research & Development, 18(1(A)), 61–68. https://doi.org/10.5281/zenodo.18608876

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18608876
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

शोध के उद्देश्य

- जनपद प्रयागराज में विकासखण्डवार कुल मुख्य कर्मकरों का कुल जनसंख्या से प्रतिशत का विश्लेषण करना।
- विकासखण्डवार कृषि में संलग्न कर्मकरों के अनुपात का अध्ययन करना।
- पारिवारिक उद्योगों में लगे कर्मकरों की क्षेत्रीय स्थिति का मूल्यांकन करना।
- संतुलित एवं सतत् क्षेत्रीय विकास हेतु उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध विधि

- द्वितीयक आँकड़े जनगणना विभाग, जिला सांख्यिकी कार्यालय प्रयागराज, एवं विकासखण्डवार आर्थिक अभिलेखों से प्राप्त किए गए हैं।
- प्रत्येक विकासखंड के लिए कुल जनसंख्या, कुल मुख्य कर्मकर, कृषि में लगे कर्मकर और पारिवारिक उद्योग में लगे कर्मकरों का प्रतिशत निकाला गया।
- प्राप्त परिणामों को तालिकाओं, आरेखों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

कुल मुख्य कर्मकरों

वर्ष 2023 में जनपद प्रयागराज के विकासखण्डवार मुख्य कर्मकरों का कुल जनसंख्या से प्रतिशत अध्ययन क्षेत्र की रोजगार संरचना और आर्थिक सक्रियता को स्पष्ट रूप से परिलक्षित करता है। प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार जनपद में मुख्य कर्मकरों का औसत प्रतिशत 20.87प्रतिशत पाया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कुल जनसंख्या का लगभग पाँचवाँ भाग नियमित एवं मुख्य आर्थिक गतिविधियों में संलग्न है। यह स्थिति जनपद की ग्रामीण–प्रधान अर्थव्यवस्था, कृषि आधारित आजीविका, तथा आंशिक एवं मौसमी रोजगार की व्यापकता को दर्शाती है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि कुछ विकासखण्डों में मुख्य कर्मकरों का प्रतिशत जनपद औसत से काफी अधिक है, जो वहाँ की अपेक्षाकृत बेहतर आर्थिक सक्रियता और रोजगार अवसरों को इंगित करता है। शंकरगढ़ विकासखण्ड में मुख्य कर्मकरों का प्रतिशत सर्वाधिक (26.35 प्रतिशत) पाया गया है, जिसका प्रमुख कारण खनन, पत्थर उद्योग, कृषि एवं श्रम आधारित गतिविधियों की प्रधानता है। इसी प्रकार कोरांव (25. 71 प्रतिशत) विकासखण्ड में कृषि के साथ–साथ सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण श्रम प्रवासन एवं विविध आजीविका स्रोतों की उपलब्धता मुख्य कर्मकर प्रतिशत को बढ़ाती है। मऊआइमा (23.80 प्रतिशत), भगवतपुर (22.83 प्रतिशत), फूलपुर (22.66 प्रतिशत), कौधियारा (22.38 प्रतिशत) तथा जसरा (22.28 प्रतिशत) जैसे विकासखण्डों में भी कृषि, व्यापार, परिवहन एवं लघु उद्योगों की उल्लेखनीय भूमिका के कारण मुख्य कर्मकरों की भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक पाई गई है। जनपद के कई विकासखण्डों में मुख्य कर्मकरों का प्रतिशत औसत के आसपास है, जो संतुलित किंतु सीमित रोजगार संरचना को दर्शाता है। कौड़िहार (21.95 प्रतिशत), सहसों (21.83 प्रतिशत), करछना (20.89 प्रतिशत), सोरांव (20.82 प्रतिशत), मेजा (20.47 प्रतिशत), चाका (20.37 प्रतिशत) तथा होलागढ़ (20.23 प्रतिशत) में कृषि आधारित अर्थव्यवस्था प्रमुख है, जबकि गैर–कृषि रोजगार के अवसर अपेक्षाकृत सीमित हैं। इन क्षेत्रों में रोजगार संरचना स्थिर तो है, किंतु आर्थिक विविधीकरण की संभावनाएँ अभी सीमित दिखाई देती हैं। इसके विपरीत, कुछ विकासखण्डों में मुख्य कर्मकरों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम पाया गया है, जो सामाजिक–आर्थिक पिछड़ेपन और रोजगार अवसरों की कमी को दर्शाता है। उरुवा (17.21 प्रतिशत), बहादुरपुर (17.64 प्रतिशत), प्रतापपुर (18.19 प्रतिशत), हण्डिया (18.54 प्रतिशत), माण्डा (18.78 प्रतिशत), सैदाबाद (18.93 प्रतिशत), धनुपुर (19.05 प्रतिशत), श्रृंगवेरपुर (19.40 प्रतिशत) तथा बहरिया (19.72 प्रतिशत) जैसे विकासखण्डों में कृषि पर अत्यधिक निर्भरता, भूमिहीन श्रमिकों की अधिकता, सीमित औद्योगिक विकास तथा मौसमी बेरोजगारी प्रमुख कारण माने जा सकते हैं, जिससे मुख्य कर्मकरों का अनुपात कम रह जाता है।

जनपद प्रयागराज में मुख्य कर्मकरों के वितरण में स्पष्ट स्थानिक विषमता को उजागर करता है। जहाँ एक ओर खनिज संसाधनों, बेहतर सिंचाई सुविधाओं, बाजार संपर्क तथा वैकल्पिक आजीविका के अवसरों वाले विकासखण्डों में मुख्य कर्मकरों का प्रतिशत अधिक है, वहीं दूसरी ओर सीमित संसाधनों और अवसरों वाले विकासखण्ड अपेक्षाकृत पिछड़े दिखाई देते हैं। अतप्रतिशत संतुलित क्षेत्रीय विकास के लिए निम्न मुख्य कर्मकर प्रतिशत वाले विकासखण्डों में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों, कौशल विकास, लघु एवं कुटीर उद्योगों, स्वरोजगार तथा गैर–कृषि गतिविधियों को प्रोत्साहित करना अत्यंत आवश्यक है। यह अध्ययन जनपद की आर्थिक संरचना, रोजगार स्थिति एवं क्षेत्रीय असमानताओं को समझने में शोध की दृष्टि से विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होता है।

सारणी क्रमांक–1

जनपद प्रयागराज में विकासखण्डवार कुल मुख्य कर्मकरो का कुल जनसँख्या से प्रतिशत-2023	
विकासखण्ड	**प्रतिशत**
कौड़िहार	21.95
होलागढ़	20.23
मऊआइमा	23.8
सोरांव	20.82
बहरिया	19.72
फूलपुर	22.66

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

बहादुरपुर	17.64
प्रतापपुर	18.19
सैदाबाद	18.93
धनुपुर	19.05
हण्डिया	18.54
जसरा	22.28
शंकरगढ़	26.35
चाका	20.37
करछना	20.89
कौधियारा	22.38
उरूवा	17.21
मेजा	20.47
कोरांव	25.71
माण्डा	18.78
सहसों	21.83
श्रृंगवेरपुर	19.4
भगवतपुर	22.83
समस्त विकासखण्ड	20.87

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका 2023

आरेख क्रमांक–1

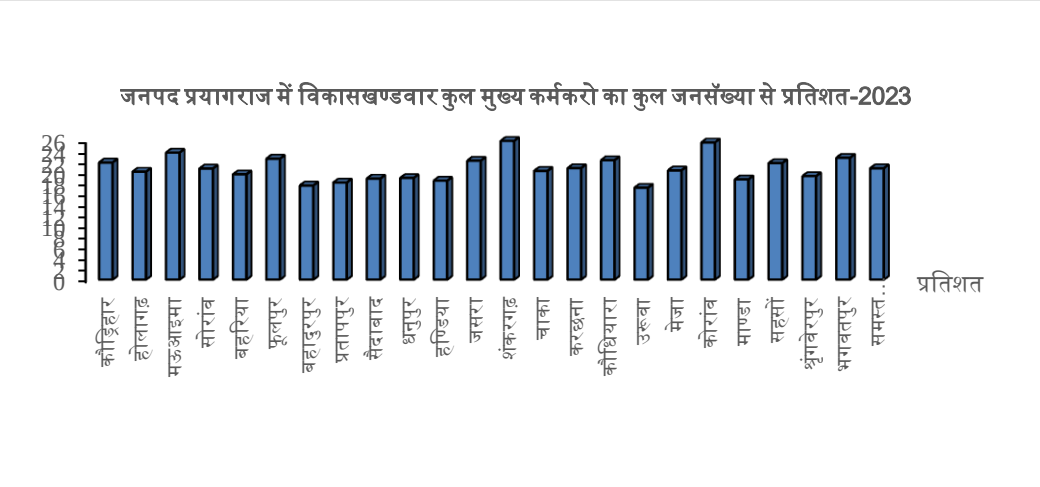

कृषि में लगे कर्मकरों

वर्ष 2023 में जनपद प्रयागराज के विकासखण्डवार कृषि में संलग्न कर्मकरों का कुल मुख्य कर्मकरों से प्रतिशत जनपद की आर्थिक संरचना तथा ग्रामीण आजीविका की प्रकृति को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करता है। प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार समस्त विकासखण्डों में कृषि में लगे कर्मकरों का औसत प्रतिशत 59.39 प्रतिशत पाया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि जनपद की कुल कार्यशील आबादी का एक बड़ा भाग अब भी कृषि एवं सहायक गतिविधियों पर निर्भर है। यह स्थिति जनपद की कृषि–प्रधान अर्थव्यवस्था, सीमित औद्योगिक विकास तथा गैर–कृषि रोजगार के अपेक्षाकृत कम अवसरों को दर्शाती है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कुछ विकासखण्डों में कृषि कर्मकरों का अनुपात अत्यंत अधिक है, जो वहाँ कृषि पर अत्यधिक निर्भरता को इंगित करता है। कोरांव (84.09 प्रतिशत) में कृषि कर्मकरों का प्रतिशत सर्वाधिक पाया गया है, जो इस क्षेत्र की पारंपरिक कृषि संरचना, सीमित औद्योगिक गतिविधियों एवं आजीविका के प्रमुख स्रोत के रूप में खेती की प्रधानता को दर्शाता है। इसी प्रकार मेजा (70.13 प्रतिशत), शंकरगढ़ (67.54 प्रतिशत), बहरिया (67.25 प्रतिशत), माण्डा (65.51 प्रतिशत), मऊआइमा (65.77 प्रतिशत), कौधियारा (64.79 प्रतिशत) तथा प्रतापपुर (64.06 प्रतिशत) जैसे विकासखण्डों में भी कृषि कार्यशील जनसंख्या का अनुपात अधिक

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

है, जो सिंचित कृषि, पारिवारिक श्रम और परंपरागत खेती की व्यापकता को प्रकट करता है। जनपद के कई विकासखण्डों में कृषि कर्मकरों का प्रतिशत मध्यम स्तर का पाया गया है, जो कृषि एवं गैर–कृषि गतिविधियों के संतुलन को दर्शाता है। होलागढ़ (62.96 प्रतिशत), फूलपुर (62.63 प्रतिशत), जसरा (62.88 प्रतिशत), श्रृंगवेरपुर (62.19 प्रतिशत), करछना (59.52 प्रतिशत), सहसों (59.35 प्रतिशत), कौड़िहार (58.39 प्रतिशत), धनुपुर (57.80 प्रतिशत) तथा हण्डिया (57.58 प्रतिशत) में कृषि आजीविका का प्रमुख आधार बनी हुई है, किंतु व्यापार, परिवहन, निर्माण तथा सेवा क्षेत्र जैसी गैर–कृषि गतिविधियाँ भी आंशिक रूप से विकसित हैं। इसके विपरीत, कुछ विकासखण्डों में कृषि में लगे कर्मकरों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम पाया गया है, जो वहाँ गैर–कृषि रोजगार के अपेक्षाकृत अधिक अवसरों की ओर संकेत करता है। चाका (35.22 प्रतिशत) में कृषि कर्मकरों का प्रतिशत सबसे कम है, जिसका प्रमुख कारण नगरीय प्रभाव, निर्माण कार्य, औद्योगिक गतिविधियाँ एवं सेवा क्षेत्र का विस्तार है। इसी प्रकार बहादुरपुर (44.15 प्रतिशत), सैदाबाद (46.10 प्रतिशत), उरूवा (46.98 प्रतिशत), भगवतपुर (49.73 प्रतिशत) तथा सोरांव (51.37 प्रतिशत) में भी कृषि पर निर्भरता तुलनात्मक रूप से कम पाई गई है, जिससे आर्थिक विविधीकरण की स्थिति परिलक्षित होती है।

जनपद प्रयागराज में कृषि अब भी मुख्य रोजगार आधार बनी हुई है, किंतु विकासखण्डवार इसके स्वरूप में स्पष्ट स्थानिक विषमता विद्यमान है। जहाँ एक ओर कोरांव, मेजा और शंकरगढ़ जैसे विकासखण्ड अत्यधिक कृषि–निर्भर हैं, वहीं चाका और बहादुरपुर जैसे विकासखण्डों में गैर–कृषि रोजगार के अवसर अपेक्षाकृत अधिक विकसित हैं। अतप्रतिशत संतुलित एवं सतत् क्षेत्रीय विकास के लिए कृषि–प्रधान विकासखण्डों में कृषि आधारित उद्योग, प्रसंस्करण इकाइयों एवं वैकल्पिक आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देना तथा कम कृषि–निर्भर क्षेत्रों में कौशल विकास एवं सेवा क्षेत्र का सुदृढ़ीकरण आवश्यक प्रतीत होता है।

सारणी क्रमांक–2

जनपद प्रयागराज में विकासखण्डवार कृषि मे लगे कर्मकरो का कुल मुख्य कर्मकरो से प्रतिशत-2023	
विकासखण्ड	**प्रतिशत**
कौड़िहार	58.39
होलागढ़	62.96
मऊआइमा	65.77
सोरांव	51.37
बहरिया	67.25
फूलपुर	62.63
बहादुरपुर	44.15
प्रतापपुर	64.06
सैदाबाद	46.1
धनुपुर	57.8
हण्डिया	57.58
जसरा	62.88
शंकरगढ़	67.54
चाका	35.22
करछना	59.52
कौधियारा	64.79
उरूवा	46.98
मेजा	70.13
कोरांव	84.09
माण्डा	65.51
सहसों	59.35
श्रृंगवेरपुर	62.19
भगवतपुर	49.73
समस्त विकासखण्ड	59.39

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका 2023

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

आरेख क्रमांक–2

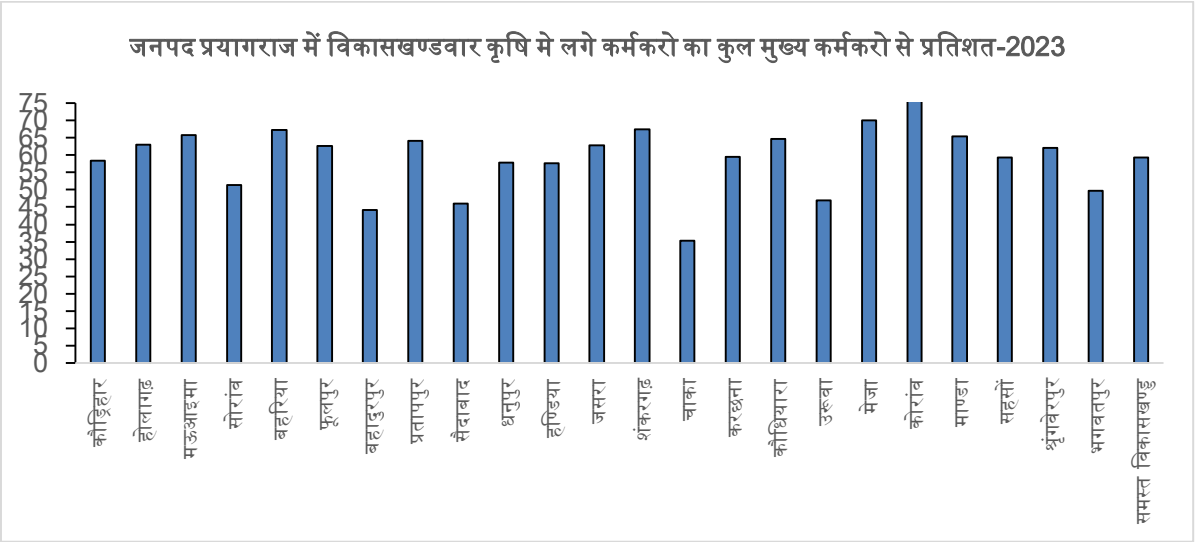

पारिवारिक उद्योग

वर्ष 2023 में प्रयागराज जनपद के विकासखण्डवार पारिवारिक उद्योगों में संलग्न कर्मकरों का कुल मुख्य कर्मकरों से प्रतिशत ग्रामीण अर्थव्यवस्था की विविधता तथा गैर–कृषि आजीविका की स्थिति को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करता है। प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार समस्त विकासखण्डों में पारिवारिक उद्योगों में लगे कर्मकरों का औसत प्रतिशत 8.46 प्रतिशत पाया गया है, जिससे यह संकेत मिलता है कि जनपद में पारंपरिक कुटीर एवं घरेलू उद्योग अभी भी सीमित स्तर पर ही रोजगार प्रदान कर रहे हैं। यह स्थिति कृषि–प्रधान संरचना, पूँजी की कमी, तकनीकी पिछड़ेपन तथा संगठित औद्योगिक विकास के अभाव से जुड़ी हुई है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कुछ विकासखण्डों में पारिवारिक उद्योगों का योगदान अपेक्षाकृत अधिक है, जो वहाँ वैकल्पिक आजीविका के स्रोतों की उपलब्धता को दर्शाता है। चाका (16.91 प्रतिशत) विकासखण्ड में पारिवारिक उद्योगों में लगे कर्मकरों का प्रतिशत सर्वाधिक पाया गया है, जिसका प्रमुख कारण नगरीय समीपता, निर्माण गतिविधियाँ, घरेलू इकाइयाँ, हस्तशिल्प तथा सेवा आधारित लघु उद्यमों का विकास है। इसी प्रकार धनुपुर (14.98 प्रतिशत) एवं सैदाबाद (14.92 प्रतिशत) में भी पारिवारिक उद्योगों की भागीदारी उल्लेखनीय है, जो घरेलू उत्पादन, कुटीर उद्योग तथा छोटे व्यापारिक कार्यों की सशक्त उपस्थिति को दर्शाती है। कौधियारा (11.01 प्रतिशत), बहादुरपुर (10.67 प्रतिशत), हण्डिया (10.46 प्रतिशत), उरूवा (9.90 प्रतिशत) तथा प्रतापपुर (9.47 प्रतिशत) जैसे विकासखण्डों में भी पारिवारिक उद्योग ग्रामीण रोजगार संरचना का एक महत्त्वपूर्ण घटक बने हुए हैं। इसके विपरीत, कई विकासखण्डों में पारिवारिक उद्योगों में लगे कर्मकरों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम पाया गया है, जो वहाँ कृषि पर अधिक निर्भरता तथा गैर–कृषि गतिविधियों के सीमित विकास को दर्शाता है। शंकरगढ़ (4.09 प्रतिशत) और कोरांव (4.45 प्रतिशत) में यह प्रतिशत न्यूनतम है, जहाँ खनन अथवा कृषि आधारित आजीविका प्रमुख है और पारिवारिक उद्योगों का विकास अपेक्षाकृत कम हुआ है। इसी प्रकार मेजा (5.34 प्रतिशत), माण्डा (5.33 प्रतिशत), सोरांव (5.91 प्रतिशत), जसरा (6.00 प्रतिशत) तथा मऊआइमा (6.14 प्रतिशत) जैसे विकासखण्डों में भी पारिवारिक उद्योगों की भूमिका सीमित दिखाई देती है। मध्यम श्रेणी में आने वाले विकासखण्डों –जैसे कौड़िहार (7.06 प्रतिशत), बहरिया (7.15 प्रतिशत), करछना (7.17 प्रतिशत), श्रृंगवेरपुर (7. 24 प्रतिशत), भगवतपुर (7.53 प्रतिशत), होलागढ़ (7.44 प्रतिशत), सहसों (6.96 प्रतिशत) तथा फूलपुर (8.48 प्रतिशत) में पारिवारिक उद्योग कृषि के पूरक रोजगार के रूप में कार्य कर रहे हैं, किंतु ये क्षेत्र अभी भी पूर्ण आर्थिक विविधीकरण से दूर हैं। समग्र रूप से यह अध्ययन दर्शाता है कि जनपद प्रयागराज में पारिवारिक उद्योग रोजगार सृजन की दृष्टि से एक सहायक लेकिन सीमित क्षेत्र बने हुए हैं तथा इनके वितरण में स्पष्ट स्थानिक विषमता विद्यमान है। जिन विकासखण्डों में नगरीय प्रभाव, बाजार संपर्क और अवसंरचनात्मक सुविधाएँ उपलब्ध हैं, वहाँ पारिवारिक उद्योगों का योगदान अपेक्षाकृत अधिक है। अतप्रतिशत संतुलित एवं समावेशी क्षेत्रीय विकास के लिए कुटीर एवं ग्रामोद्योग, हस्तशिल्प, सूक्ष्म–उद्यम, स्वरोजगार योजनाओं तथा कौशल विकास कार्यक्रमों को विशेष रूप से कृषि–प्रधान और पिछड़े विकासखण्डों में सुदृढ़ करना अत्यंत आवश्यक है।

सारणी क्रमांक–3

जनपद प्रयागराज में विकासखण्डवार पारिवारिक उद्योग में लगे कर्मकरों का कुल मुख्य कर्मकरो से प्रतिशत-2023	
विकासखण्ड	**प्रतिशत**
कौड़िहार	7.06
होलागढ़	7.44
मऊआइमा	6.14

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

सोरांव	5.91
बहरिया	7.15
फूलपुर	8.48
बहादुरपुर	10.67
प्रतापपुर	9.47
सैदाबाद	14.92
धनुपुर	14.98
हण्डिया	10.46
जसरा	6
शंकरगढ़	4.09
चाका	16.91
करछना	7.17
कौधियारा	11.01
उरूवा	9.9
मेजा	5.34
कोरांव	4.45
माण्डा	5.33
सहसों	6.96
श्रृंगवेरपुर	7.24
भगवतपुर	7.53
समस्त विकासखण्ड	8.46

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका 2023

आरेख क्रमांक–3

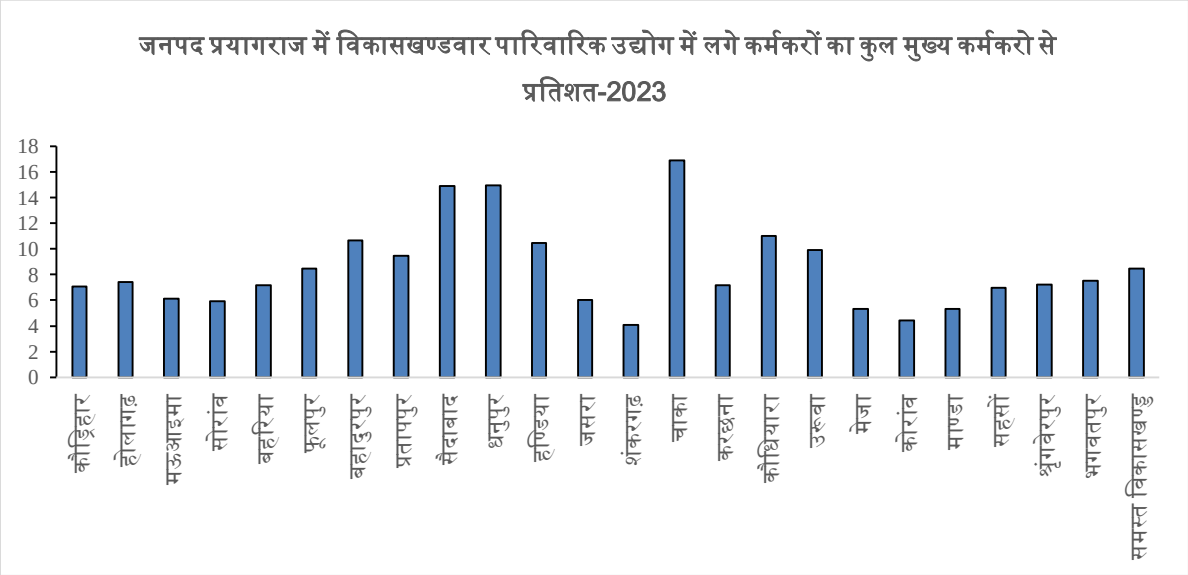

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

सुझाव

- कृषि–प्रधान विकासखण्डों में कृषि का आधुनिकीकरण एवं फसल विविधीकरण (बागवानी, सब्जी, दलहनदृतिलहन, जैविक खेती) को प्रोत्साहन दिया जाए।
- कृषि आधारित उद्योगों (खाद्य प्रसंस्करण, डेयरी, कोल्ड स्टोरेज, भंडारण) की स्थापना कर कृषि को मूल्य संवर्धन से जोड़ा जाए।
- पारिवारिक एवं कुटीर उद्योगों (हस्तशिल्प, हथकरघा, खाद्य निर्माण, बाँस/मिट्टी आधारित उद्योग) को वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और विपणन सुविधाएँ प्रदान की जाएँ।
- युवाओं और महिलाओं के लिए कौशल विकास एवं स्वरोजगार कार्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप संचालित किए जाएँ।
- गैर–कृषि रोजगार अवसरों (सेवा क्षेत्र, लघु व्यापार, परिवहन, निर्माण गतिविधियाँ) का विस्तार किया जाए।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बाजार संपर्क एवं अवसंरचना (सड़क, बिजली, डिजिटल कनेक्टिविटी) को सुदृढ़ किया जाए।
- महिला सशक्तिकरण एवं स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देकर सूक्ष्म उद्यमिता को प्रोत्साहित किया जाए।
- निम्न मुख्य कर्मकर एवं कम गैर–कृषि रोजगार वाले क्षेत्रों हेतु लक्षित क्षेत्रीय विकास योजनाएँ लागू की जाएँ।
- कृषि, ग्रामीण विकास एवं स्वरोजगार से संबंधित सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन और निगरानी सुनिश्चित की जाए।
- प्रत्येक विकासखण्ड में स्थानीय संसाधनों के सतत् उपयोग पर आधारित क्षेत्र–विशिष्ट विकास मॉडल अपनाया जाए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र से यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकलता है कि वर्ष 2023 में जनपद प्रयागराज की व्यावसायिक संरचना आज भी मुख्यतः कृषि–प्रधान बनी हुई है। कुल मुख्य कर्मकरों का औसत प्रतिशत जहाँ कुल जनसंख्या का लगभग पाँचवाँ भाग है, वहीं कुल मुख्य कर्मकरों में से लगभग 59.39 प्रतिशत कर्मकर कृषि एवं सहायक गतिविधियों में संलग्न हैं। यह स्थिति जनपद की ग्रामीण प्रधान सामाजिकदृआर्थिक संरचना, सीमित औद्योगिक विकास तथा गैर–कृषि रोजगार अवसरों की कमी को दर्शाती है। विकासखण्डवार विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि जनपद में व्यावसायिक संरचना में स्पष्ट स्थानिक विषमता विद्यमान है। शंकरगढ़, कोरांव, मेजा जैसे विकासखण्डों में जहाँ मुख्य एवं कृषि कर्मकरों का अनुपात अधिक है, वहीं चाका, बहादुरपुर एवं सैदाबाद जैसे विकासखण्डों में गैर–कृषि एवं पारिवारिक उद्योगों की भूमिका अपेक्षाकृत सशक्त दिखाई देती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राकृतिक संसाधनों, नगरीय प्रभाव, बाजार संपर्क तथा अवसंरचनात्मक सुविधाओं का व्यावसायिक संरचना पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि पारिवारिक उद्योगों में संलग्न कर्मकरों का औसत प्रतिशत मात्र 8.46 प्रतिशत है, जो इस क्षेत्र की सीमित क्षमता और उपेक्षित स्थिति को उजागर करता है। यद्यपि कुछ विकासखण्डों में पारिवारिक उद्योग कृषि के पूरक रोजगार के रूप में उभर रहे हैं, फिर भी जनपद स्तर पर यह क्षेत्र रोजगार विविधीकरण में अपेक्षित योगदान नहीं दे पा रहा है। अतः समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जनपद प्रयागराज में संतुलित एवं सतत् क्षेत्रीय विकास के लिए कृषि पर अत्यधिक निर्भरता को क्रमशः कम करते हुए गैर–कृषि, पारिवारिक एवं कुटीर उद्योगों को सुदृढ़ करना अत्यंत आवश्यक है। कृषि आधारित उद्योगों, कौशल विकास, स्वरोजगार योजनाओं तथा अवसंरचनात्मक विकास के माध्यम से रोजगार के वैकल्पिक अवसर सृजित किए जा सकते हैं। यह अध्ययन न केवल जनपद की वर्तमान व्यावसायिक संरचना को समझने में सहायक है, बल्कि भविष्य की क्षेत्रीय योजना एवं विकास नीतियों के लिए भी एक सशक्त आधार प्रदान करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Government of India. (2011). Census of India 2011: Primary Census Abstract. New Delhi: Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
2. Government of India. (2021). Rural Development Statistics. New Delhi: Ministry of Rural Development.
3. Government of Uttar Pradesh. (2023). District Statistical Handbook: Prayagraj. Prayagraj: जिला सांख्यिकी कार्यालय।
4. Government of India. (2022). Economic Survey of India. New Delhi: Ministry of Finance.
5. Government of India. (2020). Periodic Labour Force Survey (PLFS). New Delhi: Ministry of Statistics and Programme Implementation.
6. Government of India. (2018). National Sample Survey on Employment and Unemployment. New Delhi: NSSO.
7. Government of Uttar Pradesh. (2022). Uttar Pradesh Human Development Report. Lucknow: Planning Department.
8. Government of India. (2019). Agricultural Statistics at a Glance. New Delhi: Ministry of Agriculture & Farmers' Welfare.
9. Singh, R. L. (2010). India: A Regional Geography. Varanasi: National Geographical Society of India.
10. Singh, J., & Dhillon, S. S. (2014). Agricultural Geography. New Delhi: Tata McGraw-Hill.
11. Majid Husain. (2012). Systematic Agricultural Geography. New Delhi: Rawat Publications.
12. Chandna, R. C. (2011). Geography of Population. New Delhi: Kalyani Publishers.
13. Misra, R. P. (2016). Regional Planning: Concepts, Techniques and Policies. New Delhi: Concept Publishing Company.

14. Tiwari, R. C. (2013). Rural Development in India. New Delhi: Shree Publishers.
15. Datta, P. R. (2015). Indian Economy. New Delhi: S. Chand & Company.
16. Kumar, A. (2018). Rural Livelihoods and Employment in India. New Delhi: Oxford University Press.
17. Government of India. (2017). Skill India Mission: Framework and Guidelines. New Delhi: Ministry of Skill Development and Entrepreneurship.
18. Government of India. (2019). MSME Annual Report. New Delhi: Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises.
19. Planning Commission of India. (2014). Report on Employment and Livelihood. New Delhi: Government of India.
20. Todaro, M. P., & Smith, S. C. (2015). Economic Development. London: Pearson Education.